9

भाखूँ हित तेरा...

भाखूँ हित तेरा, सुनि हो मन मेरा।।टेक।।
नर नरकादि चारों गति में, भटक्यो तू अधिकानी।
पर परणति में प्रीति करी, निज परणति नाहिं पिछानी।।१।।
सहै दुख क्यों न घनेरा।। भाखूँ हित.....

कुगुरु कुदेव कुपंथ पंक फंसि, तैं बहुत खेद लहायो।
शिव सुख दैन जैन जग दीपक, सो तैं कबहुं न पायो।।२।।
मिट्यो न अज्ञान अंधेरा।। भाखूँ हित.....

दर्शन ज्ञान चरन निधि तेरी, सो विधि ठगन ठगी है।
पाँचों इन्द्रिन के विषयन में, तेरी बुद्धि लगी है।।३।।
भयो तू इनका चेरा।। भाखूँ हित.....

तू जगजाल विषें बहु उरझ्यो, अब करले सुरझेरा।
'दौलत' नेमि चरन पंकज का हो तू भ्रमर सबेरा।।४।।
नसे ज्यों दुख भव केरा।।
भाखूँ हित तेरा, सुनि हो मन मेरा.....

हे जीव! तुम ध्यान से सुनो, मैं तुम्हारे हित की बात कह रहा हूँ।।टेक।।

हे चेतन! तुम मनुष्य, नरक आदि चारों गति में कई बार भव–भ्रमण कर चुके हो और परद्रव्यों के परिणमन को अपना मानकर और अपनी आत्मा को नही पहचान कर तुमने अनंत दुख भोगे हैं।।१।।

हे जीव! तुमने कुगुरु, कुदेव, कुधर्म रूपी कीचड़ में फंसकर बहुत दुखों को प्राप्त किया है और तुमने मोक्ष सुख देने वाले संसार रूपी अंधकार में दीपक के समान जिनशासन को कभी प्राप्त नहीं किया जिससे तुम्हारे अज्ञानरूपी अंधकार का नाश नहीं हो पाया।।२।।

हे प्राणी! कर्म रूपी ठग ने तुम्हारी सम्यग्दर्शन–ज्ञान – चारित्र रूपी संपदा का हरण कर लिया है। पाँचों इन्द्रियों के विषयों में तुम्हारी बुद्धि मगन हो रही है और तुम इनके दास बन गये हो।।३।।

कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि हे जीव! तुम संसार के जाल में बहुत उलझे हुये हो परंतु अब उससे बाहर निकलो। तुम तो भगवान नेमिनाथ के चरण कमलों के भंवरे बन जाओ। इससे ही तुम्हारे संसार के दु:खों का नाश हो जायेगा।।४।।